अध्याय चतुर्थ

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय चतुर्थ

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

4. प्रदत्त विश्लेषण–

संग्रहीत संमको का विश्लेषण, सारणीयन एवं प्रस्तुतीकरण आदि अनुसंधान कार्य का महत्वपूर्ण अंग है। जिसे प्रस्तुत किये बिना शोधकार्य को विधिवत करना संभव नहीं है। सांख्यिकीय विश्लेषण करने का मुख्य उद्देश्य शोध कार्य के लिए बनाई गयी परिकल्पनाओं का परीक्षण करना है, तथा निष्कर्ष निकालकर शोध उद्देश्यों तक पहुँचना है।

आंकडो का प्रस्तुतीकरण

आंकडों का प्रस्तुतीकरण आंकडों के विश्लेषण से महत्वपूर्ण पक्षमाना जाता है। प्रस्तुतीकरण से आंकडों के अर्थ को सुगमता से बोधगम्य बनाया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन को स्पष्ट एवं बोधगम्य बनाने के लिए उनका सारणीय किया गया है। इसके अंतर्गत आंकडें विभिन्न स्तम्भो व पंक्तियों में प्रस्तुत किये जाते है।

प्रस्तुत अध्याय में विभिन्न उपकरणों के द्वारा प्राप्त समंको का विश्लेषण करके उनकी व्याख्या की गयी है।

परिकल्पना क्र–1

विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता का उनके शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

तालिका क्रमांक 4.1

शैक्षिक उपलब्धि और बौद्धिक क्षमता का सम्बन्ध

:f	चर	सहसम्बन्ध
58	1. शैक्षिक उपलब्धि 2. बुद्धि	0.55

स्पष्टीकरण :

आवासीय स्कूल के विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता और शैक्षिक उपलब्धि सहसम्बन्ध गुणांक .55 है। अर्थात् इन दोनों के प्राप्तांको में साधारण सहसम्बन्ध है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना– 2

विकलांग छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

तालिका क्रमांक 4.2

शैक्षिक उपलब्धि और सृजनात्मकता में सम्बन्ध

ं f	चर	सहसम्बन्ध
58	1) शैक्षिक उपलब्धि 2) सृजनात्मकता	0.009

स्पष्टीकरणः

आवासीय स्कूल के विकलांग छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि सहसम्बन्ध गुणांक .009 है। इसका मतलब दोनों के प्राप्तांको में सार्थक सम्बन्ध नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना–3

. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता और सृजनात्मकता में सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

तालिका क्रमांक – 4.3

बौद्धिक क्षमता और सृजनात्मकता में सम्बन्ध

ंf	चर	सहसम्बन्ध
58	1) बौद्धिक क्षमता 2) सृजनात्मकता	0.09

स्पष्टीकरणः

आवासीय स्कूल के विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता और सृजनात्मकता का सहसम्बन्ध गुणांक .09 है। अर्थात् दोनों के प्राप्ताकों में नगण्य (Negligible) सहसम्बन्ध है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना– 4

विकलांग छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक 4.4

छात्र एवं छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर।

Sex	N	Mean	S.D.	df.	t. value
छात्रा	35	373.74	81.25	58	0.71
छात्राएं	25	356.72	98.80		

0.05 स्तर पर 2

0.01 स्तर पर 2.66

स्पष्टीकरण :

उपर्युक्त सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि 0.05 स्तर पर 'टी' का मान सार्थक नही है। अतः परिकल्पना को स्वीकृत करते है इसलिए हम कह सकते है कि छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है।

परिकल्पना – 5

विकलांग छात्र एवं छात्राओं में बौद्धिक क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक – 4.5

छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता में अन्तर

Sex	N	Mean	S.D.	df.	t. value
छात्रा	35	77.49	18.49	58	5.23
छात्राएं	25	95.36	6.90		

0.05 स्तर पर 2

0.01 स्तर पर 2.66

स्पष्टीकरण :

उपर्युक्त सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि 0.05 स्तर पर 'टी' का मान सार्थक है। अतः परकिल्पना को अस्वीकृत करते है इसलिए हम कह सकते है कि छात्र एवं छात्राओं कि बौद्धिक छमता मे सार्थक अन्तर है

परिकल्पना – 6

विकलांग छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नही है।

तालिका क्र.–4.6

छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता में अन्तर

Sex	N	Mean	S.D.	df	t. Value
छात्र	35	145.40	28.69	58	0.91
छात्राएं	25	139.10	24.92		

0.05 स्तर पर 2

0.01 स्तर पर 2.66

स्पष्टीकरण

उपर्युक्त सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि 0.05 स्तर पर 'टी' का मान सार्थक नही है। अतः परिकल्पना को स्वीकृत करते है इसलिए हम कह सकते है छात्र एवं छात्राओ की सृजनात्मता में सार्थक अंतर नही है।